28/01/2026

जैज़ी संगीत की लहरों में डूबता एक बंदरगाह

बंदरगाह की **डॉक** पर खड़े होकर जब मैं समुद्र की लहरों को देखता हूँ, तो मुझे हमेशा यह एहसास होता है कि जीवन भी इन्हीं लहरों की तरह है - कभी शांत, कभी उत्तेजित, कभी रहस्यमय। लेकिन आज की सुबह कुछ अलग थी। हवा में एक अजीब सी मधुरता थी, जैसे कोई अदृश्य **जैज़ी** धुन बज रही हो, जो न केवल कानों को सुनाई दे रही थी, बल्कि आत्मा को भी छू रही थी।

मुंबई के इस पुराने बंदरगाह पर मैं पिछले तीन दशकों से आता रहा हूँ। यहाँ की हर ईंट, हर लकड़ी का तख्ता, हर जंग खाई हुई जंजीर मुझे अपनी कहानी सुनाती है। लेकिन आज मैं यहाँ सिर्फ यादों में खोने नहीं आया था। मैं यहाँ एक उद्देश्य लेकर आया था - अपने मन से उन सभी नकारात्मक विचारों को **बैनिश** करने के लिए, जो पिछले कुछ महीनों से मुझे परेशान कर रहे थे।

संगीत और समुद्र का संगम

बंदरगाह के पास एक पुराना कैफे है, जिसका नाम है "सी विंड्स"। इसके मालिक रहमान साहब एक रिटायर्ड नाविक हैं, जिन्होंने अपनी पूरी जवानी समुद्र में बिताई है। उनकी दुकान में हमेशा पुराने **जैज़ी** गानों की धुनें बजती रहती हैं - लुई आर्मस्ट्रांग से लेकर माइल्स डेविस तक। रहमान साहब कहते हैं कि संगीत और समुद्र में बहुत समानता है - दोनों ही आत्मा को शांति देते हैं, दोनों ही कभी एक जैसे नहीं रहते।

आज सुबह जब मैं कैफे में दाखिल हुआ, तो एला फिट्ज़गेराल्ड की मखमली आवाज़ कमरे में गूंज रही थी। रहमान साहब ने मुझे देखते ही चाय का एक कप सामने रख दिया और मुस्कुराते हुए बोले, "आज तुम्हारे चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिख रही हैं, जावेद भाई। क्या बात है?"

मैंने गहरी सांस ली और कहा, "रहमान मियाँ, जिंदगी कभी-कभी इतनी उलझन भरी हो जाती है कि समझ नहीं आता कि किस राह चलें। लिखने-पढ़ने का शौक तो बचपन से था, लेकिन आजकल जब भी कागज़ के सामने बैठता हूँ, तो शब्द जैसे गायब हो जाते हैं।"

रहमान साहब ने अपनी कुर्सी खींची और मेरे सामने बैठ गए। उन्होंने कहा, "देखो जावेद, **प्रोज़** लिखना भी एक कला है, बिल्कुल जहाज चलाने जैसी। कभी-कभी समुद्र शांत होता है और जहाज आसानी से आगे बढ़ता है। लेकिन कभी-कभी तूफान आते हैं, लहरें इतनी ऊंची हो जाती हैं कि लगता है सब कुछ खत्म हो जाएगा। लेकिन अनुभवी नाविक तूफान से घबराता नहीं, बल्कि उसका सामना करता है।"

शब्दों की खोज में

रहमान साहब की बातें सुनते हुए मुझे अपने लेखन की शुरुआत याद आ गई। मैं छोटा था जब पहली बार मैंने अपनी डायरी में कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं। तब शब्द इतनी आसानी से आते थे, जैसे किसी झरने से पानी बहता है। लेकिन समय के साथ, जिम्मेदारियों के बोझ तले, वह सहजता कहीं खो गई थी।

"तो क्या करूँ?" मैंने पूछा।

रहमान साहब ने खिड़की की ओर इशारा किया, जहाँ से **डॉक** और समुद्र का खूबसूरत नज़ारा दिख रहा था। "देखो वहाँ," उन्होंने कहा, "उस **डॉक** पर कितनी गतिविधि है। मजदूर माल उतार रहे हैं, नाविक अपने जहाज की मरम्मत कर रहे हैं, बच्चे लहरों के किनारे खेल रहे हैं। हर किसी की अपनी कहानी है। तुम्हें बस उन कहानियों को सुनना और समझना है।"

मैंने चाय का घूंट भरा और सोचा कि शायद रहमान साहब सही कह रहे हैं। **प्रोज़** लिखने के लिए सबसे पहले जीवन को जीना जरूरी है। अनुभवों को महसूस करना जरूरी है। और सबसे महत्वपूर्ण, अपने डर और संशयों को **बैनिश** करना जरूरी है।

नकारात्मकता को दूर भगाना

रहमान साहब ने एक और दिलचस्प बात कही। उन्होंने कहा, "जावेद, तुम जानते हो कि **बैश** का क्या मतलब होता है? अंग्रेजी में यह शब्द किसी चीज़ को जोर से मारने या आलोचना करने के लिए इस्तेमाल होता है। लेकिन मैं कहता हूँ कि कभी-कभी हमें अपनी नकारात्मक सोच को एक अच्छा **बैश** देना चाहिए। उन विचारों को इतनी जोर से मारना चाहिए कि वे वापस न आ सकें।"

मुझे उनकी बात में गहरा अर्थ समझ आया। मैं पिछले कई महीनों से खुद को यह कहता रहा था कि मैं अच्छा नहीं लिख सकता, कि मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है, कि मेरे शब्द मूल्यहीन हैं। लेकिन यह सब मेरे मन की नकारात्मक आवाज़ थी, जिसे मुझे **बैनिश** करना था।

रहमान साहब ने म्यूज़िक सिस्टम की आवाज़ बढ़ाई। अब चार्ली पार्कर की सैक्सोफोन की मधुर ध्वनि कमरे में गूंज रही थी। वह बोले, "सुनो इस **जैज़ी** संगीत को। क्या तुम्हें पता है कि जैज़ संगीतकार कभी भी एक ही धुन को दोबारा बिल्कुल उसी तरह नहीं बजाते? हर बार वे सुधार करते हैं, हर बार कुछ नया जोड़ते हैं। यही तो लेखन की सुंदरता है - हर बार तुम कुछ नया सीखते हो, कुछ नया प्रयोग करते हो।"

बंदरगाह की कहानियाँ

दोपहर तक मैं बंदरगाह पर घूमता रहा। मैंने वहाँ काम करने वाले लोगों से बातचीत की। एक बूढ़े मछुआरे ने मुझे अपने जीवन की कहानी सुनाई - कैसे उसने तूफानों का सामना किया, कैसे कभी-कभी महीनों तक मछली नहीं मिली, लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी। एक युवा लड़के ने बताया कि कैसे वह अपने पिता के नक्शेकदम पर चलकर नाविक बनना चाहता है।

डॉक पर बैठे एक बुजुर्ग चित्रकार ने समुद्र का एक खूबसूरत दृश्य बना रहा था। मैंने उनसे पूछा कि वे रोज़ यहाँ क्यों आते हैं। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "क्योंकि यहाँ हर दिन कुछ नया होता है। आसमान का रंग बदलता है, लहरों की गति बदलती है, लोगों के चेहरे बदलते हैं। यह विविधता ही मेरी कला को जिंदा रखती है।"

उनकी बातें सुनकर मुझे एहसास हुआ कि मैं गलत जगह प्रेरणा खोज रहा था। मैं अपने कमरे में बंद होकर सोचता था कि कैसे शानदार **प्रोज़** लिखूँ, जबकि असली कहानियाँ तो बाहर, इस दुनिया में बिखरी पड़ी थीं।

संगीत में छिपा दर्शन

शाम होते-होते मैं फिर से "सी विंड्स" कैफे पहुँचा। इस बार वहाँ कुछ और लोग भी थे - कुछ युवा संगीतकार जो अपने वाद्य यंत्रों के साथ आए थे। रहमान साहब ने बताया कि हर शुक्रवार की शाम यहाँ एक छोटा सा **जैज़ी** सेशन होता है।

जब संगीत शुरू हुआ, तो मैं मंत्रमुग्ध हो गया। ट्रम्पेट, सैक्सोफोन, ड्रम और पियानो - सभी एक साथ मिलकर एक अद्भुत सिम्फनी बना रहे थे। लेकिन सबसे दिलचस्प बात यह थी कि हर संगीतकार को अपने सोलो का मौका मिल रहा था, जहाँ वे अपनी मर्जी से सुधार कर सकते थे।

यह देखकर मुझे लगा कि जीवन भी तो ऐसा ही है। हम सब अपनी-अपनी धुन बजा रहे हैं, लेकिन कभी-कभी हमें दूसरों के साथ तालमेल बिठाना होता है, और कभी-कभी हमें अकेले अपना सोलो बजाना होता है।

नई शुरुआत

रात को घर लौटते हुए, मैंने तय किया कि अब मैं अपने सभी डरों और संशयों को **बैनिश** कर दूँगा। मैं नहीं सोचूँगा कि लोग मेरे लेखन के बारे में क्या कहेंगे। मैं बस लिखूँगा - अपने दिल से, अपने अनुभवों से।

घर पहुँचकर मैंने अपना लैपटॉप खोला और लिखना शुरू किया। शब्द अब रुक-रुक कर नहीं, बल्कि एक **जैज़ी** धुन की तरह बह रहे थे - कभी तेज़, कभी धीमे, लेकिन निरंतर। मैं उस **डॉक** के बारे में लिख रहा था, उन लोगों के बारे में जिनसे मैं मिला था, और सबसे बढ़कर, मैं अपने उस सफर के बारे में लिख रहा था जो मैंने आज किया था।

मुझे रहमान साहब की एक और बात याद आई। उन्होंने कहा था, "जावेद, अच्छा **प्रोज़** वही है जो दिल से निकले। शब्दों को सजाने-संवारने में इतना मत उलझो कि असली भावना ही खो जाए। **बैश** करो उन नियमों को जो तुम्हें जकड़े हुए हैं। लिखो वैसे जैसे तुम बोलते हो, महसूस करते हो।"

और मैंने ठीक वैसा ही किया। मैंने अपनी आत्मा को कागज़ पर उतार दिया, बिना किसी डर के, बिना किसी झिझक के।

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि वह दिन मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उस दिन मैंने सीखा कि कभी-कभी हमें अपने आरामदायक क्षेत्र से बाहर निकलना पड़ता है, लोगों से मिलना पड़ता है, उनकी कहानियाँ सुननी पड़ती हैं। तभी हम सच्चे अर्थों में लिख सकते हैं।

बंदरगाह की वह **डॉक** अब मेरे लिए सिर्फ एक जगह नहीं रही, बल्कि प्रेरणा का स्रोत बन गई है। और वह **जैज़ी** संगीत? वह मुझे हमेशा याद दिलाता है कि जीवन में सुधार की हमेशा गुंजाइश है, हर दिन कुछ नया सीखने का मौका है।

विपरीत दृष्टिकोण: क्या रोमांटिक आदर्शवाद हमें वास्तविकता से भटका रहा है?

ऊपर दिए गए लेख को पढ़कर कोई भी भावुक हो सकता है। बंदरगाह की **डॉक** पर बैठे लेखक, **जैज़ी** संगीत की मधुर धुनें, समुद्र की लहरें, और आत्म-खोज की यात्रा - यह सब बहुत सुंदर लगता है। लेकिन क्या यह सच्चाई है? या फिर यह केवल एक सुनहरा भ्रम है जो हम अपने लिए बुनते हैं?

आत्म-खोज का भ्रमजाल

आइए ईमानदारी से बात करें। आज के युग में हर कोई "आत्म-खोज" की बात करता है। लोग अपनी नौकरी छोड़कर हिमालय जाते हैं, समुद्र किनारे बैठकर ध्यान करते हैं, और सोचते हैं कि इससे उन्हें जीवन का उद्देश्य मिल जाएगा। लेकिन सच्चाई यह है कि ज्यादातर समय यह केवल पलायनवाद है।

लेखक ने अपनी नकारात्मकता को **बैनिश** करने की बात की है, लेकिन क्या नकारात्मक विचार हमेशा बुरे होते हैं? कभी-कभी वे हमें यथार्थवादी बनाते हैं, हमें ज़मीन पर रखते हैं। अगर आपकी लेखन क्षमता वास्तव में कमजोर है, तो बंदरगाह पर घूमने से वह बेहतर नहीं हो जाएगी। आपको कठोर परिश्रम, अनुशासन और व्यावहारिक कौशल विकसित करना होगा।

रोमांटिकीकरण का खतरा

प्रोज़ लिखने को समुद्र में जहाज चलाने से तुलना करना बहुत काव्यात्मक लगता है, लेकिन यह तुलना कितनी सटीक है? एक नाविक वर्षों की कठोर ट्रेनिंग लेता है, तकनीकी ज्ञान अर्जित करता है, और वास्तविक खतरों का सामना करता है। लेखन भी एक कौशल है जिसे रोज़ाना अभ्यास से विकसित किया जाता है, न कि भावनात्मक यात्राओं से।

यह **जैज़ी** संगीत के साथ तुलना भी भ्रामक है। जैज़ संगीतकार जो स्वतंत्र रूप से सुधार करते हैं, वे भी पहले संगीत के मूल सिद्धांतों में महारत हासिल करते हैं। माइल्स डेविस या चार्ली पार्कर रातोंरात महान नहीं बन गए - उन्होंने हजारों घंटे रियाज़ की।

सुविधाजनक सत्य

लेख में रहमान साहब कहते हैं कि नियमों को **बैश** करो और दिल से लिखो। यह सलाह सुनने में तो अच्छी लगती है, लेकिन यह अधूरी है। हर महान लेखक ने पहले भाषा के नियम, व्याकरण, संरचना और शैली को समझा है। नियमों को तोड़ने से पहले उन्हें जानना जरूरी है।

यह दृष्टिकोण युवा लेखकों को गुमराह कर सकता है। वे सोच सकते हैं कि बस भावनाओं को कागज़ पर उतार देना ही काफी है। लेकिन वास्तविकता यह है कि पाठक परिष्कृत, सुव्यवस्थित और अर्थपूर्ण लेखन की अपेक्षा रखते हैं।

संघर्ष का सच

बंदरगाह पर काम करने वाले मजदूरों की कहानियों को रोमांटिक बनाना भी समस्याजनक है। वे लोग जीवनयापन के लिए कठिन परिश्रम करते हैं, न कि आत्म-खोज के लिए। उनके संघर्ष को प्रेरणा की कहानियों में बदलना उनकी वास्तविक चुनौतियों को कम करके आंकना है।

एक मछुआरा जो महीनों तक बिना मछली के रहता है - वह अपनी मजबूरी में ऐसा करता है, न कि किसी दार्शनिक कारण से। उसके संघर्ष को एक प्रेरक कहानी के रूप में प्रस्तुत करना सुविधाजनक है, लेकिन यह उसकी आर्थिक कठिनाइयों को नज़रअंदाज़ करता है।

व्यावहारिक समाधान की कमी

लेख में कहीं भी व्यावहारिक सलाह नहीं है। अगर आप लेखन में बेहतर बनना चाहते हैं, तो आपको:

- रोज़ाना एक निश्चित समय लिखना चाहिए
- अच्छे लेखकों को पढ़ना चाहिए
- फीडबैक लेना चाहिए और उस पर काम करना चाहिए
- लेखन कार्यशालाओं में भाग लेना चाहिए
- अपनी भाषा और शब्दावली को समृद्ध करना चाहिए

यह सब **डॉक** पर बैठकर समुद्र को देखने से नहीं होगा।

आधुनिक युग की वास्तविकता

आज के प्रतिस्पर्धी युग में, केवल भावनात्मक तृप्ति से काम नहीं चलता। लेखकों को सोशल मीडिया पर उपस्थिति बनानी होती है, एल्गोरिदम को समझना होता है, मार्केटिंग करनी होती है। यह सब बहुत व्यावहारिक और कभी-कभी नीरस काम है, जिसका **जैज़ी** संगीत से कोई लेना-देना नहीं।

निष्कर्ष

मैं यह नहीं कह रहा कि प्रेरणा या आत्मचिंतन महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन हमें संतुलन बनाना होगा। अपनी नकारात्मकता को पूरी तरह **बैनिश** करने की कोशिश करना भी अस्वास्थ्यकर हो सकता है। कभी-कभी आलोचनात्मक सोच हमें बेहतर बनाती है।

असली सवाल यह है: क्या आप सच में बेहतर लेखक बनना चाहते हैं, या सिर्फ बेहतर लेखक होने का एहसास चाहते हैं? अगर पहला है, तो रोमांटिक यात्राओं से ज्यादा, कठोर परिश्रम और व्यावहारिक कौशल पर ध्यान दें।

शायद सच्चाई यह है कि हम सभी आसान रास्ते ढूंढते हैं। हम चाहते हैं कि कोई जादुई समाधान हो - एक बंदरगाह, एक **जैज़ी** धुन, एक बुद्धिमान सलाहकार - जो हमारी सभी समस्याओं का हल दे दे। लेकिन जीवन इतना सरल नहीं है। सफलता कठिन परिश्रम, धैर्य और यथार्थवादी दृष्टिकोण से मिलती है, न कि केवल भावनात्मक यात्राओं से।